بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 12.12.25

क़ुरआने करीम और नबी करीम ﷺ की हदीसों तथा हज़रत मसीह मौऊद अलै. के कथनों के प्रकाश में तबलीग़ के विषय पर स्वर्णिम उपदेश।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 12 ,1404 हश) 12.12. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم ـ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ـ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ـ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ـ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ـ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ـ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ـ

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने सूरः नहल की आयत 126 की तिलावत फ़रमाई और उसका अनुवाद बयान करते हुए फ़रमाया कि अपने रब के रास्ते की ओर हिकमत के साथ एवं अच्छी नसीहत के साथ दावत दे और उनसे ऐसी दलील के साथ बहस कर जो अति उत्तम हो, निश्चय ही तेरा रब ही उसे जो रास्ते से भटक गया है, सबसे अधिक जनता है तथा वह हिदयात पाने वालों का भी सबसे बढ़ कर ज्ञान रखता है।

क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने सुंदर शैली में तबलीग़ करने का निर्देश दिया है ताकि दूसरों पर प्रभाव भी हो और इसका लाभ भी मिले, और वे लोग जो इसके अनुसार तबलीग़ करते हैं, अल्लाह तआला की कृपा से सफल भी हो जाते हैं। अतः इस नियम को सदेव सम्मुख रखना चाहिए। आजकल सोशल मीडिया के कारण लोग यह समझते हैं कि तबलीग़ करना बड़ा सरल है,

किन्तु तबलीग़ के लिए भी कुछ शर्तें एवं नियम हैं जिन्हें हमेशा अपने सामने रखना चाहिए अन्यथा उल्टा प्रभाव हो जाता है। अतः इस बात को सदेव अपने सामने रखन चाहिए कि हमने जो तबलीग़ करनी है, वह सुन्दर रंग में करनी है।

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने तबलीग़ के विषय में एक अति महत्त्वपूर्ण हिदायत फ़रमाई, आप अलै. ने फ़रमाया कि मैं कदापि उचित नहीं समझता कि ऐसे लोग जो इस्लाम की शिक्षाओं से पूर्णतः परिचित नहीं तथा इसकी उच्चतम विशेषताओं में पूर्णतः पारंगत न हों और इस युग की टिप्पणियों के उत्तर भली भांति देने में असमर्थ हों, तथा न रूहुल कुदुस (पवित्र आत्मा, हज़रत जिब्रील अलै.) द्वारा शिक्षित हैं, वे हमारी ओर से वकील होकर जाएं। फ़रमाया कि मेरे मुबल्लिगों को अल्लाह तआला से भी एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध होना चाहिए ताकि फिर अल्लाह तआला उनका समर्थन फ़रमाए।

तबलीग़ के बारे में पहली बात हमें यह याद रखने चाहिए कि इसलाम वह अकेला धर्म है और आँहज़रत ﷺ अकेले ऐसे नबी हैं जो दुनिया में अल्लाह तआला का वह सन्देश लेकर आए जो पूरे विश्व के लिए है, और अल्लाह तआला ने आप स. को समस्त मानव जाती एवं पूरी दुनिया के लिए, समस्त क़ौमों के लिए बशीर और नज़ीर (ख़ुश ख़बरी देने वाला एवं डराने वाला) बनाकर भेजा है। इस बात को सदेव सम्मुख रखना चाहिए कि आँहज़रत ﷺ ने भी तबलीग़ के लिए निर्देश दिए हैं तथा कुछ आदेश फ़रमाया करते थे। एक यह आदेश दिया कि लोगों से उनकी बुद्धि एवं समझ के अनुसार बात करें। एक बिंदु यह भी है कि पीड़ित व्यक्ति की बददुआ से बचना। तबलीग़ करने वालों को सदा अपने नैतिक आचरण शुद्ध एवं उच्च रखने हैं तथा बन्दों के अधिकारों का इतना ध्यान हो कि वह कभी किसी पीड़ित मनुष्य की बददुआ लेने वाला न हो। फ़रमाया- इस लिए बचना चाहिए कि उसके एवं अल्लाह के बीच कोई रोक नहीं है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि ख़ुदा ने हम पर आवश्यक कर दिया है कि झूठे आरोपों को हिकमत एवं अच्छे शब्दों के साथ दूर करें। यह याद रखना चाहिए कि हमारी तबलीग़ नैतिकता की परिधि में ही रहे। कुछ लोग यह कह देते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने भी कठोर भाषा उपयोग की है। पहली बात तो यह है कि आप अलै. ने अपनी विभिन्न पुस्तकों में कठोर शब्दों के उपयोग से रोका है और यही फ़रमाया है कि किसी किसी जगह मैंने ऐसे शब्द विवश होकर प्रयोग किये हैं और इन कठोर शब्दों में उनके इतिहास के संदर्भ में बातें की हैं, उनकी भांति गालियाँ एवं अपशिष्ट भाषा उपयोग नहीं की।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने भी तफ़सीरे कबीर में ادع الى سبيل ربك بالحكمة की व्याख्या की है। आप रज़ी. ने बड़ी हसरत से फ़रमाया था कि यदि इस भेद को मुसलमान समझते तो यहूदियत तथा ईसाइयत को खा जाते। हमारा हथियार क़ुरआन करीम ही है, जिसके विषय में ख़ुदा

तआला फ़रमाता है कि इस क़ुरआन की तलवार को लेकर दुनिया से जहाद के लिए खड़ा हो। परन्तु खेद है कि आज दुनिया की हर चीज़ मुसलमानों के हाथ में है किन्तु यदि नहीं तो यही तलवार, जिसे लेकर निकल खड़े होने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया था। अब आज यह अहमदिया जमाअत का काम है कि वह इस्लाम का यह सन्देश दुनिया को बताए कि दीन में केवल कोरी दलीलें ही नहीं बल्कि नसीहत के विभिन्न आयाम हैं जिन पर अमल करना चाहिए। फिर फ़रमाया कि भावनाओं को प्रोत्साहित करने वाली बातें भी किया करो और हिकमत के साथ सुन्दर शैली में उपदेशों को भी शामिल रखा करो।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम अच्छी तरह से तबलीग़ करते रहो, लेकिन लोग यदि न मानें तो उससे यह समझ कर निराश मत हो जाना कि हमें तबलीग़ करनी ही नहीं आती, क्यूंकि सम्भव है कि तुम्हारी तबलीग़ में कोई खोट न हो किन्तु सामने वाले के दिल पर उसके गुनाहों के कारण ऐसा ज़ंग लगा हो कि ख़ुदा तआला उसके लिए हिदायत की खिड़की न खोले। भावार्थ यह है कि तबलीग़ में व्यस्त रहना चाहिए, यही मूल बात है, हमारा काम तबलीग़ करते रहना है, परिणाम दिखाना तथा प्रभाव पैदा करना ख़ुदा तआला का काम है।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फरमाते हैं- तुम मेरी बात सुन रखो और ख़ूब याद कर लो कि यदि इंसान की बात चीत सच्चे दिल से न हो तथा क्रियाशील शक्ति उसमें न हो वह प्रभाव पूर्ण नहीं होती। आप अलै. एक अन्य स्थान पर फ़रमाते हैं कि मोमिन को दो रंगी धारण नहीं करनी चाहिए, तब ही तबलीग़ में भी बरकत पड़ेगी। फिर आपने एक जगह फ़रमाया कि एक ही बात होती है, वह एक शैली में अदा करने से एक व्यक्ति को दुश्मन बना सकती है और दूसरी शैली में दोस्त बना देती है। अतः وجادلهم بالتى هى احسن के अनुसार अपना कार्य जारी रखो, इसी सुन्दर शैली का नाम ख़ुदा ने हिकमत रखा है।

फिर आप अलै. ने फ़रमाया कि चाहिए कि जब बात करे तो सोच कर एवं संक्षिप्त काम की बात करे। अतः छोटा सा चुटकुला किसी समय छोड़ दिया जो सीधा कान के अन्दर चला जाता है, फिर कभी संयोग हो तो फिर सही, अर्थात धीरे धीरे सत्य सन्देश पहुंचाता रहे और थके नहीं। परन्तु आजकल चूंकि लोग सांसारिक दुखों में डूबे हुए हैं और उनको समझाना कठिन है, यदि हमारे व्यवहार आदर्श होंगे तो अपने आप ही लोगों का ध्यान भी हमारी ओर हो जाएगा। आप अलै. ने फ़रमाया कि याद रखो कि हर ताले के लिए एक चाबी होती है, हर एक से बात करने के लिए भी एक चाबी है, यह उचित शैली है, यह नहीं कि सब के साथ एक जैसी बात की जाए, बयान करने वाले को चाहिए कि किसी के बुरा कहने का बुरा न मनाए बल्कि अपना काम किये जाए और थके नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने अपनी जमाअत को हिदायात फ़रमाई कि जिस प्रकार नमाज़,

रोज़ा, हज, ज़कात, इस्लाम के ऐसे आदेश हैं जिन पर अमल करना हर ज़माने में अनिवार्य है। इसी प्रकार जिहाद भी ऐसे कर्मों में से है जिस पर अमल करना हर ज़माने में आवश्यक है। फ़रमाया कि अब जिहाद तुम्हारा क़लम के साधन से जिहाद है, अतः इस प्रकार क़लम से जिहाद करना और दुनिया को बताना चाहिए कि एक ओर वे मानते हैं कि मसीह और मेहदी ने आना है, दूसरी ओर इनकार भी करते हैं। हम उनके मतभेदों को शब्दकोशीय अर्थों एवं झगड़ों में लेकर बैठ जाएं तो उससे लाभ कोई नहीं होगा, उनसे कहना चाहिए कि हमारा मूल उद्देश्य इस्लाम को दुनिया पर ग़ालिब करना है, क्यूंकि आँहज़रत ﷺ पूरे विश्व के लिए नबी और रसूल बन कर आए थे। आज हमारी संख्या तो विश्व की जन संख्या के चोथे भाग से भी कम है, जब तक हम दुनिया को इस्लाम के झंडे तले नहीं ले आते, हम किस तरह कह सकते हैं कि हमने बड़ा काम कर लिया है। आज यह हमारा काम है कि इस प्रकार से जिहाद करें और तभी हमारा जिहाद सफल होगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- मुरब्बियों से मैं यह कहता हूँ उन पर बड़ा भारी दायित्व है, उन्हें केवल तर्बियत ही नहीं करनी जमाअत की, बल्कि इस प्रशिक्षण के साथ साथ लोगों को अल्लाह तआला के साथ जोड़ना है। जहाँ वे ये करेंगे वहाँ उनका ज्ञान भी बढ़ाएंगे और उन्हें इस जिहाद के लिए तय्यार भी करेंगे। जब वे यह करेंगे तभी अपना संकल्प पूरा करने वाले होंगे।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. की मुरब्बियों को विभिन्न अवसरों पर फ़रमाई गई नसीहतों में से आवश्यक कार्यों का एक सारांश पेश फ़रमाया कि इन में आत्म-शुद्धि, तहज्जुद की नमाज़ का क़याम, क़ुरआने करीम की गहराई से समीक्षा, अल्लाह की स्तुति एवं अध्ययन की आदत हो और अल्लाह पर भरोसा तो अत्यधिक होना चाहिए। ख़ुशामदी (चाटुकार) नहीं होना चाहिए, फिर लोगों से मधुर सम्बन्ध होने चाहिएं, फिर बुराई के प्रचलन को रद्द करने और स्थिर स्वभाव की आदत होनी चाहिए। जब मुरब्बी ख़ुद अमल कर रहे होंगे जमाअत के अन्दर भी निशचय ही रूह पैदा हो रही होगी। फिर चिंतन मनन करने की आदत तथा अल्लाह तआला से सम्बन्ध होना चाहिए। यदि यह होगा तो फिर एक महान आन्दोलन है जो हम लोग पैदा कर सकते हैं। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ दे और दाइयान इलल्लाह को भी सामर्थ्य दे कि वे सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। अल्लाह तआला से सम्बन्ध स्थापित करें और फिर इस्लाम और अहमदिय्यत के सन्देश को दुनिया के कोने कोने में पहुँचाने वाले हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ۔ اُذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब